साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता

SAHITYA AKADEMI FELLOWSHIP

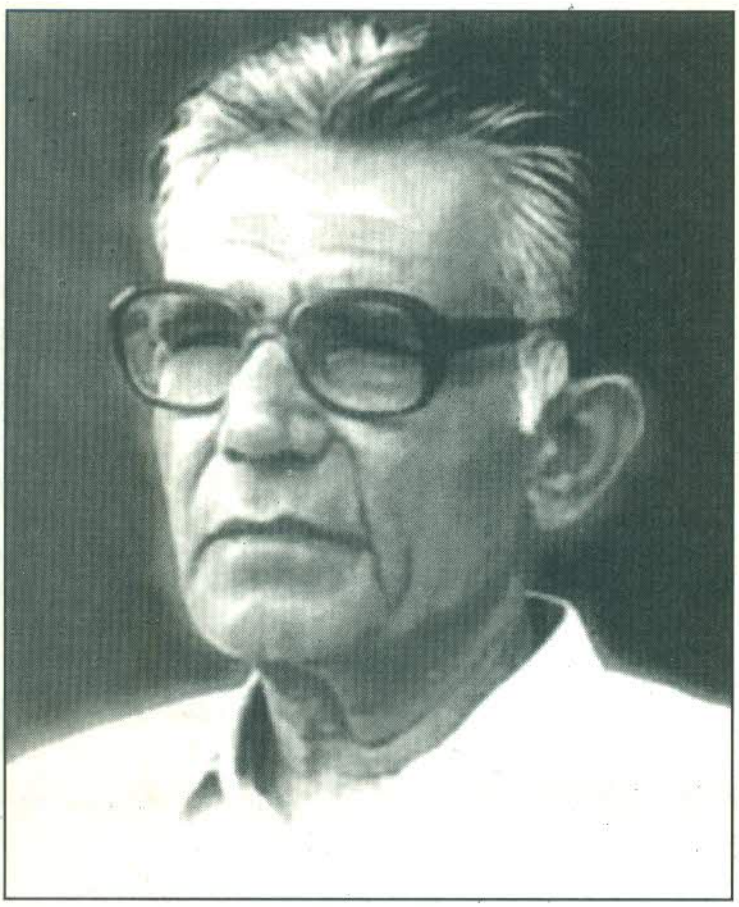

अर्जन हासिद

ARJAN HASID

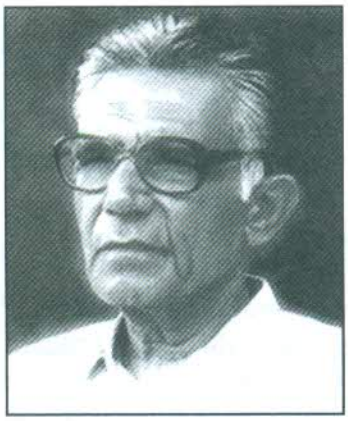

अर्जन हासिद

ARJAN HASID

अर्जन हासिद, जिन्हें साहित्य अकादेमी अपनी महत्तर सदस्यता से सम्मानित कर रही है, एक उत्कृष्ट सिन्धी कवि हैं, आपके सात महत्त्वपूर्ण कविता-संग्रह प्रकाशित हैं और आपने सिन्धी काव्य के विकास पर गहरा प्रभाव छोड़ा है।

अर्जन हासिद का जन्म 7 जनवरी 1930 को कराची, सिन्ध (अब पाकिस्तान) में हुआ। विभाजन के समय 1947 में आप भारत आ गए और अहमदाबाद में बस गए, जहाँ अपनी पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् आप डाक एवं तार विभाग में कार्यरत हुए। 1989 में आप पोस्टमास्टर के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपने 1956 में कविता लिखना शुरू किया और अपनी जीवंत एवं मारक कविताओं से पाठकों के हृदय एवं मन को आप निरंतर मोहित किए हुए हैं।

अर्जन हासिद ने निर्बाध रूप से अपने कविता-संग्रहों में नई प्रवर्त्तनकारी विशिष्टताओं को प्रस्तुत करते हुए सिन्धी में पारंपरिक शिल्प की ग़ज़ल के विकास में बड़ी भूमिका निभाई। आपकी पहली कविता पुस्तक *सुवासां जी सुरहां* (साँसों की सुगंध, 1966) की ग़ज़लों में प्रगतिशील विचारों और पारंपरिक रोमांस का उदार संयोजन दिखाई देता है। आपके अगले संग्रह *पथर पथर क'न्दा क'न्दा* (प्रत्येक पत्थर, प्रत्येक काँटा, 1974) में शामिल ग़ज़लें कविता की नई धारा (नवीं कविता) से प्रेरित हैं, जिस आंदोलन में आपकी कविताओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मेरो सिजु (मैला सूरज, 1984) नामक आपके संग्रह को साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस संग्रह की कविताओं में भाषा की अर्थगर्भिता एवं अभिव्यक्ति का अधिकतम उपयोग करनेवाले मुहावरों का प्रयोग करते हुए आपने सिन्धी कविता को पांडित्य और शब्दों की बेड़ी से मुक्त किया। इस संग्रह ने जटिल संवेदनाओं और गहन अनुभवों को अभिनव ढंग से प्रस्तुत करते हुए सिन्धी कविता में सह-संवेदन को भी प्रस्तावित किया, ज्ञानेन्द्रियों की व्यावहारिक अदला-बदली। *मोगो* (मंदबुद्धि, 1992) में आपने भाषा और ज्ञानेन्द्रियों के साथ अनुप्रयोग करते हुए सह-संवेदन की तकनीक को और भी विकसित किया। *उंजना* (प्यास, 1999) में आपने व्यापक रूप से वैयक्तिकीकरण का प्रयोग करते हुए अप्रतिम

Arjan Hasid on whom Sahitya Akademi is conferring its Fellowship is an outstanding Sindhi poet who is the author of seven highly acclaimed collections of poetry and who has had an immense influence on the development of Sindhi poetry.

Arjan Hasid was born on 7th January 1930 in Karachi, Sind (now in Pakistan). At the time of Partition in 1947 he migrated to India and settled in Ahmedabad where after finishing his school he joined the Posts and Telegraph Department. He retired from service as Post Master in 1989. He started writing poetry in 1956 and continues to enthral the hearts and minds of readers with his soulful and mordant poetry.

Arjan Hasid has played a great role in the development of the traditional form of the ghazal in Sindhi by ceaselessly innovating and introducing new features in each of his collections of poetry. In *Suwasan Jee Surhaan* (Fragrance of Breath, 1966) his first book of poems, the ghazals were an eclectic fusion of progressive ideas and traditional romance. His next collection *Pathar Pathar Ka'ndaa Ka'ndaa* (Each Stone, Every Thorn, 1974) his ghazals were inspired by the vigour of New Wave (*Naee'n Kavita*) in poetry, the movement to which his poetry also greatly contributed.

In *Mero Siju* (The Soiled Sun, 1984) the collection which won him the Sahitya Akademi Award, he freed Sindhi poetry from its pedantry and lexical shackles by employing a refreshing new idiom which greatly exploited the suggestivity and expressivity of the language. The collection also introduced to Sindhi poetry synaesthesia, the functional swap of the senses, offering a new mode of capturing complex sensations and extreme experiences. In *Mogo* (The Dullard, 1992) he further improved the technique of synaesthesia by experimenting with the language and the senses. In *Unjna* (The Thirst, 1999) he created a uniquely sensual

सांविदिक संसार का सृजन किया। आपके अगले संग्रह *साही पात्जे* (क्षणभर का विश्राम, 2006) ने एक और मील का पत्थर स्थापित किया, जिसकी कविताओं में सृजनात्मक ओज और ऊर्जा की ऐसी भाषा का प्रयोग है कि प्रत्येक कविता पर हासिद की छाप नज़र आती है। अपने अद्यतन संग्रह *ना ले'न ना* (नहीं, ऐसा नहीं, 2009) में एक बार फिर आपने ग़ज़ल के शिल्प के साथ प्रयोग किए तथा दोहा, बातिस एवं वाइज जैसे प्राचीन शिल्पों को आधुनिक संवेदनाओं एवं सरोकारों के साथ प्रस्तुत किया। हासिद के समस्त कविता-संग्रहों ने हमारे इस भरोसे को सुदृढ़ किया है कि प्रतिभाशाली कवि कविता के क्षेत्र में सदैव ताज़ा हवा का एक झोंका लाने में सक्षम है तथा वह हवा उससे अब तक अछूती रह गई असाधारण सुरभि से ओत-प्रोत हो सकती है। लेकिन साथ ही हम सदैव यह अनुभव करते हैं कि कुछ ऐसा हमें प्राप्त हो रहा है, जो अद्वितीय है। हासिद स्वयं से पलायन कर अपने चीज़ों तक पहुँचते हैं, कभी आंशिक रूप में और कभी संपूर्णत:।

एक व्यक्ति के रूप में अर्जन हासिद को आसानी से पहचाना जा सकता है—ठीक बीच से सींथे हुए आपके बाल, आपकी साधारण सफ़ेद क़मीज़ और आम आदमी वाली आपकी मुखाकृति—लेकिन यह सामान्य बाह्य स्वरूप अत्यधिक जटिल एवं ऊर्वर मन को छुपा लेता है। केवल आपके झुर्रीदार ललाट और तनी हुई दृष्टि ही संभवत: आपकी सृजनात्मक ओजस्विता को प्रकट कर देते हैं। प्राय: आपका कविता-पाठ फुसफुसाहट की तरह शुरू होता है, लेकिन क्रमश: वह सांगीतिक पूर्णता और तीव्रता में तब्दील हो जाता है। हासिद का नैतिक रोष और संताप इतना अंतरंग है और आपकी प्रस्तुति इतनी प्रभावी है, कि आपके पाठ को सुनते हुए प्राय: इस बात का साक्षी हुआ जा सकता है कि आपके नाख़ून लकड़ी के टुकड़े को खुरचते होते हैं।

अर्जन हासिद की ग़ज़ल गहराई से समकालीन परिवेश और इसकी समस्याओं से जूझती है। आपकी कविता न केवल चारों ओर की परिस्थितियों को संदर्भित करती है, बल्कि उन परिस्थितियों को हमारी समझ में तब्दील करते हुए उन्हें बेध जाती है। विख्यात समालोचक स्व. परम अभिचंदानी ने हासिद की कविताओं के सदंर्भ में निम्नांकित बात कही हैं, "हासिद की नई ग़ज़ल के बारे में जो प्रसन्नता की बात है, वह यह कि वे हमारे बारे में बात करती हैं और वे अतीत के बारे में नहीं, बल्कि केवल आज की बात करती हैं, दर्दनाक, अंधकारमय आज। उनकी कविताएँ शुद्ध रूप में हमारी सोच और अनुभवों की स्वचालित मनस्-अभिव्यक्तियाँ हैं। ग़ज़लें व्याख्या नहीं करतीं, वे नियति से संघर्ष करते हुए समय के साथ चलते हुए सहजता से आज के समय की साक्षी के रूप में उपस्थित हो उठती हैं। वे कविता का प्रयोग पीड़ाहारी के रूप में करते हैं। यह निदान तो नहीं, किन्तु वे दर्द को कम ज़रूर कर देती हैं, ग़ज़लें सहजता से बाहरी आवरण को भेदकर आधुनिक जीवन की अंदरूनी शिराओं में प्रवेश कर जाती हैं, जो बहुत ही निष्ठुर है, और बहुत कुछ माँगता है। उनकी ग़ज़लें गहन ज्ञान पर आधारित जीवन का विविधवर्णी चित्र प्रस्तुत करती हैं।"

world by extensively using personifications. In his next collection *Saahee Patje* (Relax a While, 2006) he achieved yet another milestone by using the language with such creative verve and energy that every poem bore the seal of Hasid. In his latest collection *Na Ie'n Na* (No, not So, 2009) he has once again experimented with the form of ghazal and has also gone back to old classical forms like Dohas, Batis and Waais imbuing them with modern sensitivity and concerns. All the collections of Hasid strengthen our belief that a brilliant poet is always capable of introducing a draft of fresh air into poetry, and also of imbuing that air with the unusual aroma of his touch. But at the same time we are always left with the feeling that while giving something unparalleled, Hasid has escaped from himself into something else, sometimes in parts, sometimes completely.

Arjan Hasid as a person is easily recognizable with his hair parted right in the middle, his simple white shirt and his common man mien – but this simple exterior hides an extremely complex and fertile mind. The only things that perhaps betray his creative vigour are his furrowed forehead and his unflinching gaze. Usually the reading of his poetry starts with a murmur but it quietly develops an operatic wholeness and an uncanny sharpness as the reading progresses. Hasid's moral indignation and anguish are so visceral, and his performances so expressive, that to hear him read is almost to witness him scratch his nails on a piece of wood.

Arjan Hasid's ghazals profoundly engage with the contemporary milieu and its problems. His poetry does not merely refer to the situations around, but penetrates through them transforming itself as well as our understanding of the situation. The renowned critic, the late Param Abhichandani had this to say about Hasid's poetry: "What is pleasing about Hasid's new ghazals is that they talk about us and they talk only of this day, the painful, dark today and not of the past. His poems are pure psycho automation expressing our thoughts, our feelings. The ghazals do not explain, they simply come out as witness to the present age, moving through time and struggling with destiny. He uses poetry as an anodyne. It's not a cure, but is certainly pain-alleviating; the ghazals get well beyond the outer surface to the inner living sinews of modern life that is so cruel, so demanding. His ghazals present a vivid picture of life based on intimate knowledge."

हासिद स्वयं दृढ़तापूर्वक कहते हैं, ''कोई सृजन तभी आधुनिक है, जबकि वह आपके आस-पास के परिवेश का सरस, जीवंत भाषा में सजीव चित्रण करता है। इसके साथ-साथ सघन प्रस्तुति अच्छी ग़ज़ल का सारतत्त्व हैं। ऐसा होने पर ही ग़ज़ल आधुनिक समय के साथ क़दमताल कर सकती है और 'नवीं कविता' का हिस्सा बन सकती है। ग़ज़ल की शांत निरभ्रता बहुत कुछ कह सकती है...। तकनीकी उत्कृष्टता के बिना ग़ज़ल ज़िंदा नहीं रह सकती।''

हासिद की ग़ज़लों की दूसरी अनूठी विशिष्टता आपकी लय है। ग़ज़ल के शिल्प में प्राय: कोमल भावनाओं को अभिव्यक्ति दी जाती है, जिसकी लय प्राय: मृदु और स्त्रैण होती है। लेकिन हासिद की ओजवान भाषा ने आपकी ग़ज़लों को जो सुर दिया है, वह इस शिल्प के लिए बिलकुल अपरिचित है। इसलिए बिना किसी हिचक के कहा जा सकता है कि हासिद की ग़ज़लों ने ग़ज़ल की प्रकृति को बदलने में सफलता प्राप्त की है।

जैसा कि हासिद पाते हैं, ''पार-गमन की राह लंबी है। लेखन सच्ची तपस्या है, गहन तपस्या। यह शांत करती है, तृप्त करती है, ठुनकती है, चीख़ती है, दाँत पीसती है, सुनती है और होंठों को सिल देती है।''

हासिद की सैकड़ों ग़ज़लों को संगीत की जीवंत धुनों में पिरोकर छोटे-बड़े प्राय: सभी सिन्धी गायकों ने गाया है।

अर्जन हासिद को बहुत से पुरस्कार एवं सम्मानों से भी विभूषित किया गया है, जिनमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1985), गुजरात सिन्धी अकादमी गौरव पुरस्कार (1998), एनसीपीएसएल (NCPSL) का आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (2006), टैगोर साहित्य पुरस्कार (2011) तथा अखिल भारत सिन्धी बोली सभा का आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (2012) शामिल हैं।

साहित्य अकादेमी श्री अर्जन हासिद को अपने सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* से सम्मानित करते हुए अत्यधिक गौरव का अनुभव कर रही है।

Hasid himself avers: "A creation is modern only when it enlivens the surrounding milieu in a lucid, living language. This along with a compact presentation is the essence of a good ghazal. This is how the ghazal has kept pace with the modern times and has become part of the *Naee'n Kavita*. The silent serenity of the ghazal can say a lot... The ghazal cannot survive without technical excellence."

Another distinguishing feature of Hasid's ghazals is their tone. Ghazal being a form which is generally used to express tender emotions its tone is usually silk-soft and feminine, but Hasid's vigorous language has endowed his ghazals with a baritone register that has been quite alien to this form. So one can, without any hesitation, say that Hasid's ghazals have succeeded in altering the very temperament of the ghazal.

As Hasid observes: "There is a long way to traverse. Writing is devout austerity, a severe penance. It soothes, gratifies, whimpers, screeches, clenches, listens and sews the lips."

Hundreds of Hasid's ghazals have been set to music in soulful tunes and has been sung by almost every Sindhi singer, major or minor.

Arjan Hasid is the recipient of numerous awards and honours including the Sahitya Akademi Award in 1985, the Gujarat Sindhi Akademi Gaurav Puraskar in 1998, NCPSL Lifetime Achievement Award in 2006, Tagore Literature Award in 2011 and Akhil Bharat Sindhi Boli Sabha Lifetime Achievement Award in 2012.

Sahitya Akademi takes immense pride in bestowing its highest honour of the Fellowship on Sri Arjan Hasid.